

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

॥श्रीजाण्यायममः॥सर्वीसामेवविद्यां नां र चिं जानातिष्रां बु चः "र्याता वार् चि में मित्रं हु मक्रो स्तुं चीः ॥११११ का सर्मित र्यातं सर्वविद्व व्यक्ति में मित्रं हु मक्ष्रे में का नां नीते पां ब सं वार् में माम माम में भाग नं स्नु च्या का स्मार्थ का का नों नीते पां ब से प्राप्त का स्मार्थ का स्

Acc. Mo: - 1915 M 1124

THE! - 113181 & TOBER .

Futhod - 012 * 1737

subject? - Lexican

TIM: - 6

l gil

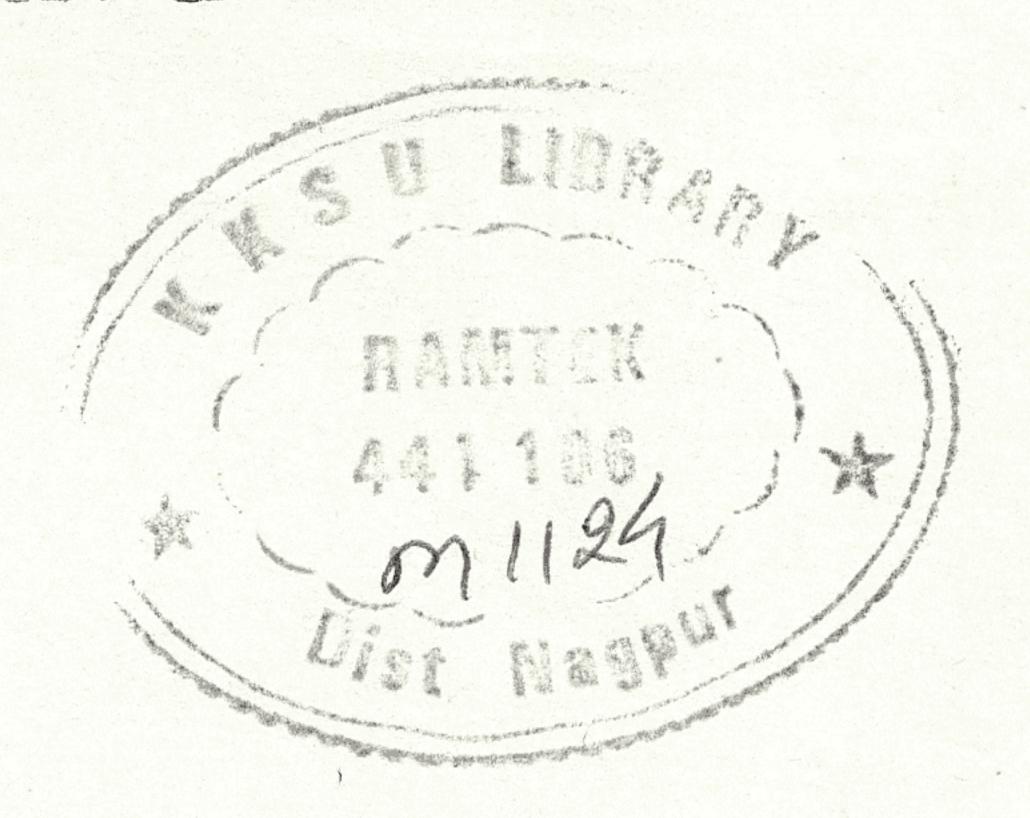
प्राच्यातं वे मुखिषप्र की नितं वर्षां खंगां कुः समाव्याता कुत्रा हः कु सितिष वाक्ष्मां प्रमेष्ठवं समार्थ्यातं वमा काश्वास्ट ते गरे के प्रियंत्र प्राप्ति स्वेत्न स्वाप्तां स्वप्तां स्वप त्र जः समार्यातो जेता जखप्रकी तितः ११००। ते जस्त जैसमार्यतं स्रितिः ११६ शासता। जगित जः समार्यातो जन्ने उप्पक्ष नितः ११६०० । नार् राज्ञ सकारः स्यान्ते ए प्रश्वसमाहतः। प्रकारा गायतप्रे स्रो सकारे प्रविध्याने स्थाने द्वारा स्थाने द्वारा स्थाने स्याने स्थाने स्थाने

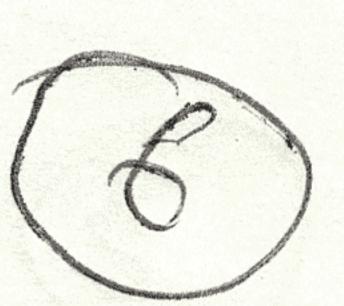
1124

 मः शिवचंद्र मित्र नमा चृत्र स्मीः प्रकीर्तिता। मा नमाति मित्र चन धने मः प्रकिर्तिता। स्थाप्य में के प्रमामित्र करिता। स्थाप्य करिता

The second secon

सापराक्ष-चव्यमे चसाचे रक्षीः प्रकी तिता । सः रेख-चसमाय्यातः सम्प ब चप्रकीर्ति। ४१।। हः कीपेवर्ष्णकाये तथ्यम् ते तिगायते हिस्पादेव तो चहणति निश्चतर ति विसाप ॥ प्रशासन् के दिन की त्यार पि वार्य । प्राम्या । प्रमणने १०३१॥ को धनने निर्मण सिते प्रमणने प्रमणने कि विवास के भागा । प्रमणने के के सामतस्यस्यार्छय् निवन्ति। इतिएका क्षयः क्षित्यसमामः॥ ७००० रदेशका के विरेश्वर पाठ ये तार रेनड करण किसीतं ह्या धीपरा छो। जिल्ला





,CREATED=17.10.20 15:58
,TRANSFERRED=2020/10/17 at 15:59:50
,PAGES=6
,TYPE=STD
,NAME=S0004105
,Book Name=M-1124-EKAJHAR NIDHAR
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE5=00000006.TIF

[OrderDescription]